मासिक
RNI No. MPHIN/2004/14249

अक्षर वार्ता

मूल्य: 100 /- रूपये

वर्ष - 19 अंक - 7
(मई 2023)
Vol - XIX Issue No - VII
(May- 2023)

कला-मानविकी-समाजविज्ञान-जनसंचार-वाणिज्य-विज्ञान-वैचारिकी की अंतरराष्ट्रीय रेफर्ड एवं पियर रिव्यूड शोध पत्रिका

Indexed In International, Impact Factor Services (IIFS) Database and Indexed with IIJIF
Indexed In the International, Institute of Organized Research, (I2OR) Database
Monthly International, Refereed Journal & Peer Reviewed
ISSN 2349 - 7521 , IMPACT FACTOR - 7.125

» aksharwartajournal@gmail.com » www.facebook.com/aksharwartawebpage » +918989547427

AKSHARWARTA IS registered MSME with Ministry of MSME, Government of India
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021

Scanned with OKEN Scanner

ISSN 2349 - 7521
RNI No. MPHIN/2004/14249

वर्ष-19 अंक - 7 , मई - 2023
Vol - XIX, Issue No. VII
May - 2023
Impact Factor - 7.125

मासिक
अक्षर वार्ता
मूल्यः 100 /- रूपये

MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
aksharwartajournal@gmail.com

Monthly International Refereed & Peer Reviewed Journal

प्रधान संपादक - प्रो. शैलेन्द्रकुमार शर्मा
संपादक- डॉ. मोहन बैरागी
संपादक मंडल :-
डॉ.जगदीशचन्द्र शर्मा (उज्जैन)
प्रो.राजश्री शर्मा
डॉ. शशि रंजन 'अकेला' (आरजीपीवी,भोपाल)
डॉ. सदानन्द काशीनाथ भोंसले (पुणे)
प्रो. उमापति दिक्षित
डॉ. मोहसिन खान (महाराष्ट्र)
डॉ. दिग्विजय शर्मा
सहायक सम्पादक :-
डॉ.भेरुलाल मालवीय
डॉ. अंजली उपाध्याय
डॉ. उपेन्द्र भार्गव
डॉ. पराक्रम सिंह
डॉ. रूपाली सारये
डॉ. अवनीश कुमार अस्थाना

आवरण चित्र - इंटरनेट से साभार

विशेषज्ञ समिति
डॉ. सुरेशचन्द्र शुक्ल 'शरद आलोक' (नार्वे), श्री शेर बहादुर सिंह (यूएसए), डॉ. रामदेव धुरंधर (मॉरीशस), डॉ. स्नेह ठाकुर (कनाडा) डॉ. जय वर्मा (यू.के.), प्रो. गुणशेखर गंगाप्रसाद शर्मा (चीन), डॉ. अलका धनपत (मॉरीशस), प्रो. टी. जी. प्रभाशंकर प्रेमी (बैंगलुरू), प्रो. अब्दुल अलीम (अलीगढ़), प्रो. आरसु (कालिकट), डॉ. रवि शर्मा (दिल्ली), डॉ. सुधीर सोनी (जयपुर), डॉ. अनिल सिंह (मुंबई), डॉ. तुलसीदास परौहा, उज्जैन

सह संपादक
डॉ. उषा श्रीवास्तव (कर्नाटक), डॉ. मधुकांता समाधिया (उत्तर प्रदेश), डॉ. अनिल जूनवाल (मप्र), डॉ. प्रणु शुक्ला (राजस्थान), डॉ. मनीष कुमार मिश्रा (मुम्बई/वाराणसी), डॉ. पवन व्यास (उड़ीसा), डॉ. गोविंद नंदाणिया (गुजरात), प्रो. डॉ. किरण खन्ना (अमृतसर, पंजाब)

नोट : पत्रिका में प्रकाशित सभी लेख, लेखकों के अपने विचार है, इनसे संपादक या संपादक मंडल का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

शोध-पत्र भेजने संबंधी नियम

शोध-पत्र 2500-5000 शब्दों से अधिक नही होना चाहिये। ०. हिन्दी माध्यम के शोध पत्रों को कृतिदेव 010 (**Kruti Dev 010**) या युनिकोड मंगल फोंट में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में भेजें। ०. अंग्रेजी माध्यम के शोध-पत्र टाईम्स न्यु रोमन (**Times New Roman**) ,एरियल फोंट (**Arial**) में टाईप करवाकर माईक्रोसॉफ्ट वर्ड में अक्षरवार्ता के ईमेल पर भेजने के बाद हार्ड कॉपी तथा शोध-पत्र मौलिक होने के घोषणा-पत्र के साथ हस्ताक्षर कर अक्षरवार्ता के कार्यालय को प्रेषित करें। ०. **Please Follow- APA/MLA Style for formatting** अक्षरवार्ता का वार्षिक सदस्यता शुल्क रूपये 1200/-रूपये साधारण डाक से एवं 1800/- रूपये रजिस्टर्ड डाक से एवं प्रकाशन पंजीयन शुल्क रूपये 1500/- का भुगतान बैंक द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक विवरण निम्नानुसार है- बैंक:- **Union Bank of India,**

Account Holder - Aksharwarta
Current Accont NO. 510101003522430
IFSC- UBIN0907626 Branch- Rishi Nagar,Ujjain,MP,India

गुगल पे, फोन पे, पेटीएम, भीम आदि युपीआई से भुगतान के लिए मोबाईल नं. 9424014366 का उपयोग करें
तथा भुगतान की मूल रसीद,शोध-पत्र एवं सीडी के साथ कार्यालय के पते पर भेजना अनिवार्य है।

संपादकीय कार्यालय का पता- संपादक अक्षर वार्ता
43,क्षीर सागर,द्रविड मार्ग,उज्जैन,मप्र. 456006,भारत, मोबा :-8989547427 Email: aksharwartajournal@gmail.com

नोट:- अक्षरवार्ता में सभी पद मानद व अवैतनिक है।/ शोध पत्रिका में प्रकाशित सभी लेखों में लेखकों के अपने विचार है, संपादक मंडल का इससे सहमत होना आवश्यक नही है।

Scanned with OKEN Scanner

Peer Review Board/Committee

1. Dr. Lakkidi Komar Reddy, Govt. Junior College, Hasanparthy
2. Dr. Ambika Singh, Assistant Professor,Kanpur Institute For Teacher Education, Kanpur
3. Dr. Anirban Sahu, Dr. Shyama Prasad Mukherjee University, Ranchi, Jharkhand (India).
4. Dr. Ashutosh Kumar, Assistant Professor of Hindi, Himachal Pradesh University, Shimla
5. Dr. Gitanjali Nayak, Assistant Professor, villa Marie Degree college for women, Hyderabad
7. Dr. Kewal Krishan Malhotra, Associate professor, Guru Nanak Dev University, Amritsar
8. Dr Neelakshi Joshi, Assistant professor, Laxman Singh Mahar Govt. PG College, Pithoragarh
9. Dr Neelam Devi, Puruhottam Inter College, Khurja, Fatehpur
10. Dr. P. K. Upadhyay, Head, RBS College Bichpuri Campus DrBRA University Agra
11. Dr. Rajnikant Kumar, Assistant Professor, Amrapali Group of Institutes, Haldwani, Nainital
12. Dr. Ravi Kant Kumar, Department of Sociology, SSJ Govt P G College Syalde, Almora
13. Dr. Reshmi Raveendran, Pdf, Hindi, Cochin University of Science and Technology, Cochin
14. Dr Sadhna Agrawal, Assistant Professor, Kamala Nehru college , University of Delhi
15. Dr.Sukhvir Singh, Assistant professor, Jaswant Singh Bhadoriya Law College, Mathura
16. Dr. Suraj Mukhi, Associate Professor, Balwant Vidyapeeth Rural Institute, Bichpuri, Agra;
17. Dr. Himanshu Yadav, Assistant professor, S.P.M College, University of Allahabad
18. Mr. Jagtap Navanath Raghunath, Shri Sant Damaji Mahavidyalaya, Mangalwedha
19. Radha Bhardwaj, Assistant professor, Government Degree College, Hathras, U.P.
20. Md. Tanwir Yunus, Professor & Head, Vinoba Bhave University,Hazaribagh,Jharkhand
21. Raghvendra V Miskin, S.K. College of Arts & Comm& Sci., Talikoti, Vijaypur, Karnataka
22. Varsha Rani, Assistant Professor, Dr. B. R. Ambedkar University, Agra , UP
23. Mrs. Alka Chaturvedi, Karamat Husain Muslim Girls PG College, Lucknow, UP
24. Mrs. Anjanee Saraf, Assistant Professor, Dr. C. V. Raman University, Bilaspur , CG
25. Dr. Amol Krushnarao Gulhane, Assistant Professor, RTM Nagpur University, Nagpur
26. Dr. Ashish Gangadhar Ujawane, Mahalaxmi Jagdamba College of Lib. & info. Sci., Nagpur
27. Dr. Manda Manikrao Nandurkar, Matoshree Vimalabai Deshmukh Mahavidyalaya, Amravati
28. Dr. Manisha, Professor, Rajkiya Snatkottar Mahavidhyalaya, Fatehabad, Agra
29. Nirmala Kumawata, Govt. College, Jamua, Ramgadh, Jaipur
30. Dr. Anju Sihare, Assistant Professor, Govt.Chhatrasal College pichhore, Dist. Shivpuri, M.P.
31. Dr. Atul Gupta, Assistant Professor, Govt. College, Sahrai Dist. Ashoknagar, M.P.
32. Dr. Parikshit Layek, Vice-Principal, Sri R. S. A. Teacher's Training College, Hazaribagh

Scanned with OKEN Scanner

अनुक्रम

» विकास यात्रा की दृष्टि से हिंदी और सिंहल पद्य साहित्य की तुलना
डी. पी. सिनालि नदीपमा पतिरण 07

» रस सूत्र एक पूनर्मूल्यांकन : त्रिस्तरीय सिद्धांत
कार्तिक मोहन डोगरा 11

» मार्क्सवादी मनोविश्लेषण
मेवालाल 17

» एक क्रांतिधर्मी साहित्यकार : फणीश्वरनाथ रेणु
डॉ. शशि भूषण शर्मा 22

» 'डूब' उपन्यास में कृषक जीवन की त्रासदी
श्यामू यादव 25

» 1857 की क्रान्ति का सामरिक अध्ययन
डॉ. राम तिवारी 28

» औद्योगिक संगठनों में कार्य वातावरण एवं समय प्रबंधन
डॉ. नरेश कुमार नेमा 30

» लोक संस्कृति में राजस्थान का अचलेश्वर महादेव मंदिरः एक परिचय
विजेन्द्र कुमार 33

» वसुधैव कुटुम्बकम् : दार्शनिक दृष्टिकोण
डॉ. मंजू लता 35

» मालवा के संस्कार लोकगीत में व्यक्त लोक-जीवन
अर्पिता सांखला 37

» सतपुड़ा क्षेत्रान्तर्गत भारिया जनजाति का सांस्कृतिक जनजीवन : एक ऐतिहासिक अनुशीलन
अनमोल भारद्वाज 40

» 'विष्णु प्रभाकर' का उपन्यास 'निशिकान्त' : एक विवेचन
डॉ. फिरोज आलम 43

» सृष्टि प्रक्रिया में पुरूष एवं ब्रम्ह की भूमिका
डॉ. जितेन्द्र कुमार द्विवेदी 45

» "जीवन की व्यावहारिक समस्याओं का दार्शनिक समाधान"
प्रवीण कुमार पाण्डेय 48

» आतंकवादः नए प्रारूप आतंकवाद रोधी राष्ट्रीय व अन्तरराष्ट्रीय प्रयास
डॉ. निशा बहल 51

» अरूण कमल के काव्य में प्रकृति चित्रण
कल्पना पाल 54

» भगवती चरण वर्मा के काव्य में मानव सौन्दर्य का विश्लेषण
अंजना छिम्पा 56

» आधुनिकसंस्कृतकथाकारश्रीगणेशरामविरचित संस्कृतकथाकुञ्जस्यमीक्षणम्
डॉ. ओमप्रकाश सारोलिया 60

» सत्ता, समाज और राजनीति के आलोक में गुलज़ार की पटकथा : 'मेरे अपने' और 'आंधी'
विकास कुमार 62

» दलित आन्दोलन के सन्दर्भ में प्रेमचन्द साहित्य का योगदान
डॉ. कुसुम यादव 66

» 'हिन्दी स्त्री विषयक कविताओं में अस्मितामूलक विमर्श'
सारिका ठाकुर 69

» किन्नर समाज के संघर्ष और सामाजिक स्वीकार्यता का यथार्थ - 'अस्तित्व' उपन्यास के संदर्भ में
सुमन राजभर 72

» भारतीय परम्परागत ज्ञान का वैज्ञानिक विश्लेषण
डॉ. कपित देव सेमवाल 75

» शेखावाटी का हवेली स्थापत्य और भित्ति चित्रांकन : एक विरासतीय अध्ययन
आस्था महरिया 77

» बागड़ महाराज सन्त मावजी और उनकी मानववाद स्वानुभूति
डॉ. श्रवण कुमार 80

» अमरकांत की कहानियों में दर्शित वैचारिकी
डॉ. मीनाक्षी अधिकारी 84

» परिवार संस्था और शरद जोशी एवं उनके समकालीन व्यंग्यकार
राजेश कुमार शर्मा, डॉ. राज नारायण शुक्ल 87

» मेहरून्निसा परवेज की कहानियों में नारी को भोग्या समझने की प्रवृत्ति : एक मूल्यांकन
सरोज मिश्रा, डॉ. सुरूचि मिश्रा 91

» डॉ. गौतम शर्मा व्यथित का लोकनाट्य शैलियों पर रचित नाटक साहित्य
डॉ. मिनाक्षी दत्ता 94

» Crime in Corporate Sector In India
Pooja singh, Dr. R. S. Udawat 96

» Philosophy of Life and Vision of Death in The Poetry of O.P. Bhatnagar
Shailendra kumar Upadhyay 99

» Language and Society
Poonam Pandey 102

» Corporate Sector and Foul Play
Pooja singh, Dr. R. S. Udawat 106

» Indo - China Relation and its

Scanned with OKEN Scanner

अक्षर वार्ता
अंतरराष्ट्रीय मासिक शोध पत्रिका
ISSN 2349-7521, Impact Factor - 7.125
Vol - XIX, Issue - VII, May - 2023
MSME Reg. No. UDYAM-MP-49-0005021
"AKSHARWARTA" Monthly International Refereed Journal

'विष्णु प्रभाकर' का उपन्यास 'निशिकान्त' : एक विवेचन

डॉ. फिरोज आलम

असिस्टेंट प्रोफेसर, हिन्दी विभाग, करीम सिटी कॉलेज, जमशेदपुर, झारखंड

विष्णु प्रभाकर मानवतावादी रचनाकार हैं।अपने रचनाओं के माध्यम से उन्होंने समाज में मानवीय- मूल्य एवं मानवीय संवेदना को स्थापित करने का प्रयास किया है। उनकी सभी रचनाओं में मानवीयता काहीस्वर मुखर है। उनका मानना है कि मानवीयता से ऊपर कोई भी जाति, धर्म या सम्प्रदाय नहींहोताहै। उन्हीं के शब्दों में- 'मैं मूलतः मानवतावादी हूँ। उत्कृष्ट मानवता की खोज मेरा लक्ष्य है। आकाश के तारों से प्रेम करता हूँ परन्तु यह भी मानता हूँ कि यह धरती भी एक सुन्दर तारा है इसलिए मैं यथार्थ से कभी नहीं भागता। पर घटित में सुन्दर और शुभ लेने का ही मेरा स्वभाव है। अशुभ का चित्रण भी मैं शुभ की पुष्टि के लिए ही करता हूँ। वर्गहीन अहिंसक समाज किसी दिन स्थापित हो सकेगा या नहीं, लेकिन मेरा विश्वास है कि उसकी स्थापना के बिना विश्व का कल्याण नहीं है।'[1]

यह बात सच है कि समाज का विकास तभी हो सकता है जब वहधर्म, जातिएवं सम्प्रदाय से ऊपर उठकर उस समाज में मानवीय सम्बन्ध एवं मानवीय मूल्य ही सर्वोपरि हो। विष्णु जी का यही दृष्टिकोण है। मनुष्यता की यह खोज उनके सभी रचनाओं में परिलक्षित होती है।

विष्णु प्रभाकर जी ने समाज में जो कुछ भी अनुभव किया उस अनुभव को उन्होंने अपने लेखन का आधार बनाया और रचनाओं के माध्यम से उसे अभिव्यक्त किया।वे स्वयं कहते हैं- 'धर्म और जाति के नाम पर जो कुछ मैंने देखा, मानवचरित्र की जिन नीचाइयोंऔर गिरावटों का मैंने अनुभव किया,वेकालान्तरमें मेरे साहित्य की प्रेरक शक्तियाँबनीं। इसीलिए मन उत्कृष्ट मानवता की खोज में व्यग्र और व्यस्त हो उठा।'[2]

उनका यह अनुभव उनके रचनाओं में स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। घटनाओं और पात्रों के माध्यम से वेमानवीयता की ही अलख जलाने का प्रयास करते हैं।'निशिकान्त' उनका ऐसा ही उपन्यास है।

'निशिकान्त' उपन्यास सन्-1955 ई. में प्रकाशित हुआ।इस उपन्यास का प्रथम प्रकाशन सन्- 1951 ई. में पहले 'ढलती रात' शीर्षक से हुआ था फिर यह 1955 ई. में 'निशिकान्त' शीर्षक से प्रकाशित हुआ। और सन् 1986 ई. में पुनः संशोधित होकर नए संस्करण में आया। साम्प्रदायिक समस्याओं पर आधारित यह उपन्यास आज भी उतने ही प्रासंगिक लगते हैं।

'निशिकान्त' उपन्यास की कथावस्तु सन् 1920 से लेकर सितम्बर 1939 तक के पंजाब प्रान्त की है। लेकिन उसे पढ़ते हुए ऐसा प्रतीत होता है कि मानो यह आज की कहानी है। क्योंकि कहीं न कहीं आज हम उन्हीं समस्याओं से जूझ रहे हैं।

इस उपन्यास का मुख्य पात्र 'निशिकान्त' है। जो धर्म, जाति, सम्प्रदाय, रूढ़िवादी संस्कार तथा धार्मिक कर्मकांड से ऊपर उठकर केवल और केवल मानवता की बात करता है, और मानवीय मूल्यों को बनाए रखने का प्रयास करता है।

'निशिकान्त' ऐसेसमाज का हिस्सा है जो साम्प्रदायिकता की भेंट चढ़ा हुआ है। हर तरफ अराजकता का माहौल है ऐसे माहौल में उनका प्रयास मानवीय संवेदना को बनाए रखना और मानवीय मूल्यों को स्थापित करना है। उपन्यास का आरम्भ शहर में दंगे के साथ शुरू होता है। पूरा शहर दंगे की चपेट में है। हर तरफ अराजकता का माहौल है। शहर की यह हालत देखकर 'निशिकान्त' बहुत दुःखी होकर कहता है- 'हर कहींहिन्दू है, मुसलमान है;पर मनुष्य आज कहीं नहीं है।'[3]इसी मनुष्यता की तलाश करता है यह उपन्यास।

दंगे के बाद शहर की क्या स्थिति होती है। सदियों से एक साथ रह रहे लोगों के दिल में किस प्रकार नफरत पैदा हो जाती है इसका यथार्थ चित्रण उपन्यास में किया गया है।

हमारे देश में विभिन्न जाति, धर्म एवं सम्प्रदाय के लोग एक साथ निवास करते हैं। सबकी अपनी अपनी संस्कृति है और यही देश की सुंदरता है। विभिन्न संस्कृतियों के आदान-प्रदान देश को सौंदर्य बनाते है। जिसमें सामाजिक जीवन के समस्त पहलुओं का समावेश होता रहता है। समस्याएँ तब उत्पन्न होतीं हैं जब इसमें एक दूसरे के प्रति प्रतिस्पर्धा का भाव आ जाता है। उपन्यास इन्हीं कारणों पर प्रकाश डालता है।

दंगे के कारण लोगों में उपजी मानसिकता और शहर में अमन चैन स्थापित करने के लिए निशिकान्तसभी धर्मों के अनुयायी के साथ मिलकर समन्वय स्थापित करने का प्रयास करता है।

आज इन्हीं समन्वय की आवश्यकता हमारे समाज को भी है जब तक हम एक दूसरे के महत्व और मूल्य को नहीं समझेंगे तब तक हम इन समस्याओं से ऐसे ही जूझते रहेंगे।विष्णु प्रभाकर जी का भी यही विचार है वह 'निशिकान्त' के माध्यम से कहते हैं- 'बेशक कोई कारण नहीं कि आदमी प्रेम से न रह सके। धर्म उसमें बाधक नहीं है। उसके लिए तो एक-दूसरे को समझने की आवश्यकता है।..... पहली बात यह है कि हमारे दिलों में मिलकर रहने की इच्छा हो। दूसरे हम एक-दूसरे का दृष्टिकोण इमानदारी से समझें। तीसरी बात सबसे महत्वपूर्ण है अर्थात् हम अपनी समझ को अमली रूप दें।'[4]

जब तक हम एक दूसरे के महत्व और मूल्य को नहीं समझेंगे तब तक इस प्रकार की समस्याओं का समाधान नहीं हो सकता।मनुष्य जब स्वार्थ में लिप्त हो जाता है तब वह अपनी बुद्धि खो बैठता है। उसका दृष्टिकोण संकीर्ण

Scanned with OKEN Scanner

और अत्य हो जाता है। हमें यह ध्यान रखना चाहिए कि हम किसी भी जाति, धर्म या संप्रदाय से हॉसबसे पहले हम मानव हैं। विष्णु प्रभाकर जी का यही विचार है।

उपन्यास में 'निशिकान्त' और 'अहमद' दोनों बचपन के मित्र हैं। दोनों में एक दूसरे के प्रति स्नेह और कृतज्ञता का भाव है। शहर में दंगा होने के बाद भी उनकी मित्रता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता दोनों उसी भाव से एक दूसरे के प्रति समर्पित रहते हैं। दोनों की मित्रता इस बात का प्रमाण है कि मानवता अब भी बाकी है।

ईद के मौके पर जब 'अहमद' को सेवैया बनाने के लिए दूध की आवश्यकता पड़ती है तब 'निशिकान्त' हीउसे अपने घर से दूध देता है। एक दूसरे के प्रति स्नेह और कृतज्ञता का मार्मिक चित्रण उपन्यासकार नेइन शब्दों में किया है- 'ईद का दिन था सदा की भांति हिंदुओं ने अपनी गाय-भैसों का दूध निकाला और मुसलमानों में बाँट दिया। कान्त के चाचा की बाल्टी भी कुछ ही क्षणों में खाली हो गई और वह अन्दर चले गये। लेकिन कान्त बहुत देर तक आने-जाने-वालों को देखता हुआ दरवाजे पर खड़ा रहा। धीरे-धीरे भीड़ कम हो चली। सब अपने-अपने घरों में त्यौहार मनाने की तैयारी करने लगे।कान्त भी अन्दर जाने को मुड़ा कि तभी उसकी दृष्टि अपने सहपाठी अहमद पर पड़ी। उसके हाथ में खाली लोटा था और उसकी आँखों में निराशा बही पढ़ती थी। वह ठिठक गया। पुकारा,'अहमद' !....'तुझे दूध नहीं मिला?'तू अब तक कहाँ था'?...'अम्मा को बुखार आता है, देर हो गई।''तो..''वापिस जा रहा हूँ।'- कहते-कहते उसका गला भर आया।कान्त ने एक बार फिर अहमद को देखा और एकदम अन्दर की ओर भाग चला।.....अन्दर माँ को देखा तो धीरे से डरते-डरते पूछा,'दूध और है क्या?'माँ बोली,'है, तू पियेगा ?''ना।''तो ?'..'अहमद को दूध नहीं मिला।''कौन अहमद ?''वह मेरे साथ पढ़ता है। उसकी माँ को बुखार आता है। उसे देर हो गई।'....माँ थी किस्नेहसे भीगआई, बोली,'लोटेमें दूध रखा है, ले जा।'कान्तउल्लास में डूब गया और अहमद कृतज्ञ स्नेहमें।'[5]
आज इसी प्रकार की स्नेह और कृतज्ञता की आवश्यकता है।

'अहमद' और 'निशिकान्त' के माध्यम से उपन्यासकार यह दिखाने का प्रयास किया है कि परिस्थितियाँ चाहे कैसी भी हों, हमें मानवता का साथ कभी नहीं छोड़ना चाहिए।

जब तक हमारे दिलों में एक दूसरे के प्रति स्नेह का भाव नहीं होगा तब तक यह समस्याएँ ऐसे ही बनी रहेंगी। मिलजुल कर एक साथ रहना यही हमारी संस्कृति है हमारे देश की सुंदरता है।

अंततः यह कहा जा सकता है कि 'निशिकान्त' उपन्यास में विष्णु प्रभाकर जी ने'निशिकान्त'के चरित्र को मानवतावादी के रूप में प्रस्तुत कर 'साम्प्रदायिक सौहार्द' स्थापित करना चाहते हैं। उनका यह उपन्यास ऐसी ही एक कोशिश करता है। वर्तमान परिप्रेक्ष्य में यह उपन्यास मानवीय संवेदना को जगाने की कोशिश करता है। यही इस उपन्यास की प्रासंगिकताहै। इसके अतिरिक्त कुछ अन्य सामाजिक समस्याओं को भी इस उपन्यास के माध्यम से उठाया गया है जिससे हमें सोचने और समझने की आवश्यकता है।

संदर्भ सूची:-

1. विष्णु प्रभाकर, मेरे साक्षात्कार,किताबघर प्रकाशन, नयी दिल्ली,संस्करण,2008,पृ.26 2.वही,पृ.19
3. विष्णु प्रभाकर,निशिकान्त, शब्दकार प्रकाशक,दिल्ली,संस्करण- अक्टूबर,1986पृ.15
4. वही, पृ.100
5. वही, पृ.59-60

Scanned with OKEN Scanner